शिक्षण विधियाँ

- परिचय
- लक्ष्य
- उद्देश्य
- महत्व
- विशेषताएं

अधिक उन्नत PDF एवं समर्पित कोर्स के लिए –

SKY EDUCARE ऐप डाउनलोड करें / Download Mobile App
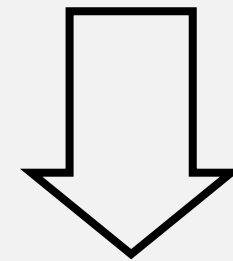
Download

सतत् एवं व्यापक मूल्याङ्कन

परिचय:

- सतत और व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई) वर्ष 2009 में भारत के शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत अनिवार्य मूल्यांकन प्रक्रिया है। मूल्यांकन का यह दृष्टिकोण भारत में छठी से दसवीं कक्षा और कुछ विद्यालयों में बारहवीं के छात्रों के लिए राज्य सरकारों के साथ-साथ केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा पेश किया गया था।

अभिप्राय -

- सतत और व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई) Continuous and comprehensive evaluation छात्रों के विद्यालय-आधारित मूल्यांकन की एक प्रणाली है जिसमें छात्रों के विकास के सभी पहलू शामिल हैं। यह मूल्यांकन की एक उन्नतशील प्रक्रिया है जो दोहरे उद्देश्यों पर बल देती है।

- यहां सतत और व्यापक से तात्पर्य विद्यार्थी की शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक गतिविधियों का निरंतर अथवा नियमित रूप से मूल्यांकन से है। अर्थात **विद्यालय आधारित एक ऐसी मूल्यांकन विधि है जो विद्यार्थियों के विकास के सभी पक्षों से संबंधित है तथा निरंतर प्रक्रिया है।** इस हेतु विभिन्न पर विधियों की सहायता अध्यापक लेता है।

सतत और व्यापक मूल्यांकन के लक्ष्य:

- सी.सी.ई का मुख्य उद्देश्य बच्चे की विद्यालय में उपस्थिति के दौरान उसके हर पहलू का मूल्यांकन करना है।
- सी.सी.ई का उद्देश्य बच्चों के तनाव को कम करना है।
- मूल्यांकन को व्यापक और नियमित बनाना।
- रचनात्मक शिक्षण के लिए शिक्षक को स्थान प्रदान करना।
- निदान और उपचार के साधन प्रदान करना।
- बृहद् कौशल वाले शिक्षार्थियों का निर्माण करना।

सतत और व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य:

- **विद्यार्थियों का कार्यभार कम करना तथा उन्हें परीक्षा के तनाव से मुक्त करना।**
- बालकों का सर्वांगीण विकास मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुसार करना।
- छात्रों को अधिक से अधिक सह शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना।
- अधिगम के दौरान आने वाली समस्याओं के निदान हेतु उपचारात्मक शिक्षण।
- आत्म-मूल्यांकन के लिए शिक्षार्थियों को अवसर प्रदान करना।
- निदान और उपचार के माध्यम से छात्र की उपलब्धि में सुधार के लिए मूल्यांकन प्रक्रिया का उपयोग करना।

सतत और व्यापक मूल्यांकन की विशेषताएं:

- सी.सी.ई का **'सतत'** पहलू मूल्यांकन के **'निरंतर'** और **'आवधिक'** पहलू का ध्यान रखता है।
- सी.सी.ई का **'व्यापक'** घटक बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के मूल्यांकन का ध्यान रखता है।
- इसमें विद्यार्थी के विकास के **शैक्षिक के साथ-साथ सह-शैक्षिक** पहलुओं का मूल्यांकन शामिल है।
- शैक्षिक पहलुओं में पाठ्यक्रम संबंधी क्षेत्र या विषय विशिष्ट क्षेत्र शामिल हैं, जबकि सह-शैक्षिक पहलुओं में जीवन कौशल, सह-पाठ्यक्रम संबंधी गतिविधियां, दृष्टिकोण और मान्यताएं शामिल हैं।
- सह-शैक्षिक क्षेत्रों में मूल्यांकन पहचान मानदंडों के आधार पर कई **तकनीकों का उपयोग** करके किया जाता है, जबकि जीवन कौशल में आकलन और परीक्षण सूची के संकेतकों के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है।

सतत और व्यापक मूल्यांकन के कार्य:

- सी.सी.ई शिक्षक को **प्रभावी शिक्षण** की रणनीतियों को व्यवस्थित करने में सहायता करता है।
- सतत मूल्यांकन कमजोरियों का **निदान करने में सहायता** करता है और शिक्षक को कुछ व्यक्तिगत शिक्षार्थियों की जांच की अनुमति देता है।
- सतत मूल्यांकन के माध्यम से छात्र अपनी शक्तियों और कमजोरियों को जान सकते हैं।
- सी.सी.ई दृष्टिकोण और मान्यता प्रणाली में **परिवर्तन की पहचान** करने में मदद करता है।
- सी.सी.ई छात्रों की शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों में प्रगति पर **जानकारी प्रदान** करता है जिसके परिणामस्वरूप शिक्षार्थियों की **भविष्य की सफलता का पूर्वानुमान** होता है।

सतत मूल्यांकन की विधियां

- सत्र परीक्षा
- इकाईपरीक्षा
- मासिक परीक्षाएं
- सेमेस्टर पद्धति

सतत मूल्यांकन के क्षेत्र

- छात्र की अभिरुचि
- छात्र की सृजनात्मकता
- ज्ञान
- पारिवारिक रुचियां
- बोध
- वैयक्तिक रुचियां
- शारीरिक स्थिति तथा स्वास्थ्य
- अनुप्रयोग
- विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि
- विद्यार्थी की त्रुटियां

व्यापक मूल्यांकन के विभिन्न पक्ष

- **संज्ञानात्मक पक्ष** – संज्ञानात्मक पक्ष के अंतर्गत बालक के अंदर निहित ज्ञान ,स्मरण ,पुनः स्मरण आदि चीजें सम्मिलित होती हैं । जिनका मूल्यांकन किया जाता है।
- **भावनात्मक पक्ष** – इसके अंतर्गत बालक के भाव पक्ष, दया करुणा सत्य निष्ठा आदि का मूल्यांकन किया जाता है।
- **कौशलात्मक पक्ष** – इसमें निहित कार्यकुशलता कार्य करने की क्षमता आदि का मूल्यांकन किया जाता है।